आपातकाल में सृजन फुलवारी

सीता गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सीता गुप्ता

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-114-5

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, सीता गुप्ता

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SEETA GUPTA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	खिलवाड़	6
2.	समय	7
3.	महत्व दिवस का	8
4.	टेसू संग फागुन	9
5.	खुशी	10
6.	दर्द एक भक्त का	11
7.	किताबें एक धरोहर	12
8.	पुकार परिंदों की	13
9.	प्रार्थना	14
10.	जीवन धर्म	15
11.	मैं होता दुखदायी	16
12.	अनुपम दृश्य	17
13.	नमन	18
14.	जीवन भी एक बंधन	19
15.	डगर विश्वास की	20
16.	समय बनाम नारी	21

खिलवाड़

किया खिलवाड़ उसी प्रकृति से, जिसने हमें पाला-पोसा।
दोहन किया उथल पुथल कर, पग-पग उसे मसल डाला।

शिक्षित हुए पर भौतिकता में,
सामानों को सजा लिए।
पंख नहीं दिए थे भगवन ने,
पर आसमान में उड़ चले।

दखल दिया प्रभु की लीला में,
अपनी दखलंदाजी से।
आज डरे अब खड़े हैं सारे,
कोरोना महामारी से।

धधक रहे ज्वालामुखी जो,
उनको अनदेखा किया।
भूकंपों के झटकों को भी,
मस्तिष्क से झटका दिया।

जब-जब अति हुई धरती पर,
प्रकृति चुप नहीं बैठी है।
तब अपनी नियति से वो तो,
अपना रूप दिखाती है।

संभलो मानव अब भी संभलो! प्रकृति की पूजा करो।
समय पर रहते सारे एकजुट, अदृश्य शक्ति को नमन करो!

समय

नहीं चैन है घड़ी को एक क्षण, वो तो हर पल चलती।
आगे बढ़ें कदम दुनिया के, चलते-बढ़ते कहती।

रुका समय तो दुख ही देता,
मानव को समझाती।
ठहरा पानी बदबू देता,
सीख बड़ी है देती।

हर सड़क की मंजिल होती,
वो भी राह है देती।
घड़ी-सड़क जब चलते रहते,
सही दिशा तब मिलती।

कदम-कदम जब मिलें मनुज के,
डगर सुंदर हो जाती।
टिक-टिक चलतीं घडियाँ देखो,
कानों अमृत देतीं।

साँसों की डोरी भी चलती, तभी सुकून हैं देतीं।
वरना रुके अगर जो दुनिया, आँखें गीली होतीं।

महत्व दिवस का

भोर दिवस की होते ही, पक्षियों का कलरव बढ़ता है।
पड़ी ओस की बूँदों संग, पल्लव का नर्तन बढ़ता है।

छटा बिखेरती है वो बगिया,
जहाँ गुलाब मुस्काता है।
उसकी पंखुड़ी-पंखुड़ी को फिर,
भौंरा राग सुनाता है।

बच्चे विद्यालय को जाते,
प्रसाद ज्ञान का पाने को।
सारे मानुष काम पर लगते,
अपना फर्ज निभाने को।

धूप सुनहरी आगे बढ़ती,
जगत की चाकी चलती है।
हर मानुष के जीवन की जो,
एक कहानी बनती है।

जो न होता दिवस जगत में, अंधकार फैला होता।
पशु-पक्षी न प्राणी होते, मानुष जन्म कहाँ मिलता?

टेसू संग फागुन

मैं टेसू हूँ पलाश भी हूँ, और किंशुक रूप कानन में हूँ।
राधा के मन मंदिर में सज, बासंती रंग आधार भी हूँ।

मदमस्त फागुनी हवा के संग,
अपना यौवन दिखलाता हूँ।
ऋतुराज बसंत के संग-संग,
पहले ही दस्तक देता हूँ।

गणगौर के दिन मैं घर-घर में,
पूजा की थाली में सजता हूँ।
जो नारी व्रत यहाँ रखती हैं,
रंग बन आशीष मैं देता हूँ।

मेरे बासंती रंग में तो,
राधा का मन भी बसता है।
जो पीतांबर कान्हा पहने,
उन वसनों में मैं सजता हूँ।

वो मुरली वाला मनमोहन, मुझको भी प्यार वो करता है।
मेरे सुंदर पक्के रंग में, होली बौछार वो करता है।

खुशी

मिले खुशी तभी ही मुझको, गैरों को मुस्कान दे पाऊँ।
छला गया है जो अपनों से, उसके दुख को दूर भगाऊँ।

दुखियों को मुस्काने देकर,
गीत राग के उन्हें सुनाऊँ।
राह कठिन जो पग के नीचे,
थोड़ा सुगम उसे कर पाँऊ।

पतझड़ सा जहाँ उजड़ा जीवन,
आस बसंत की मैं दे पाऊँ।
देहरी दीपक बनकर वहाँ पर,
घर-बाहर प्रकाश फैलाऊँ।

मिलें हाथ से हाथ सभी के,
दीपमालिका मैं सजाऊँ।
उम्मीदों को रोशन करके,
मन के तम को दूर भगाऊँ।

दूर अँधेरा जो हो जाए जब,
अधरों तले मुस्कान दे पाऊँ।
छला गया है जो अपनों से,
उसके दुख को दूर भगाऊँ।

प्रसन्नता की घड़ी देकर के, आँखों को खुशी दे पाऊँ।
जो खिल उठें वो चेहरे उनके, मैं भी जी भरकर मुस्काऊँ।

दर्द एक भक्त का

सुंदर पूजा थाली सजी हो, पर मन होता जब खाली।
पूजा में तब मन नहीं लगता, न बजती हाँथ से ताली।

किस विधि से मैं करूँ अर्चना,
तुम ही बताओ भगवन!
कौन से तुमको पुष्प चढाऊँ,
और रोली अक्षत चंदन।

बिन पटरी की रेल खड़ी है,
पटरी कहाँ से लाऊँ।
कौन बिछाए उन पाँतो को,
हाँथ कहाँ बढाऊँ?

तू तो मालिक सबका भगवन,
मन ने सदा ही माना।
लेकिन खेल बिगड़ रहा आगे,
किसी ने न पहचाना।

भक्त की भक्ति से ही प्यारे, तू बनता है भगवन।
अपनी कृपा की दृष्टि बिछादे, बैठा है जो कण-कण।

किताबें एक धरोहर

नव निर्मित वो सृजित पंक्तियाँ, एक धरोहर होती हैं।
अपने-अपने कालखंड का, इतिहास बयां वो करती हैं।

नव निर्माण हुआ कब कितना?
ध्वंस हुआ कुछ कब कितना।
उन्नत हो कौन शीर्ष पर पहुँचा,
नीचे गिरा कौन कितना?

सिंहासन-सिंहासन की तब,
कविता सरिता बनती है।
कथा कहानी सागर बनकर,
गाथा कहती बढ़ती है।

रावण का पराक्रमी होना,
कंस का मरना कहती है।
शकुनि के उस छल कपट को,
आज भी दोषी कहती है।

अनाचार और व्यभिचार की, खुली अभिव्यक्ति होती हैं।
निंदा और प्रशंसा की भी, संस्मरण वो बनती हैं।

पुकार परिंदों की

सुनो! तुम इंसा, हमारी एक बात।
.हम हरदम ही थे, तुम्हारे ही साथ।

अपनी मीठी चहक से,
तुम्हें खुश थे करते।
फिर क्यूँ तूने आज!
मेरे तोड़े घरौंदे?

कहाँ जाके ढूँड़े हम,
अपने नन्हें वो बच्चे।
अब कहाँ बनाए आज,
अपने फिर से घरौंदे।

इन पेड़ों से मानव,
हम दोनों का नाता।
ये बचाते हैं जीवन,
जो देता विधाता।

इन पेड़ों से मानव,
धरा पर हरियाली।
जो बचाते हैं हमको,
और देते हैं खुशहाली।

ना होंगे ये पेड़ तो, हम दोनों न होंगे।
ना मेरे ही नीड़, और न तुम्हारे घर होंगे।

प्रार्थना

संस्कार के बीज को बोकर, मानवता के सुमन खिलाओ।
नैतिकता का बिगुल बजाकर, सुचरित्र को आज बचाओ।

स्वदानव का बढ़े जो फोड़ा,
उसका भी उपचार करो।
उठते कलुषित विचारों को,
आज अभी ही दफन करो।

आसुरी शक्ति बढ़ने न दो,
कन्याओं का मान करो।
नारी का सम्मान करके,
दैत्यों का तुम दमन करो।

अत्याचार और व्यभिचार को,
खोद जड़ों से आज मिटाओ।
मानव दानव बन न पाए,
संस्कारों से उसे बचाओ।

दैवीय कृपा को पाकर मानव, मानवता को आज बचाओ।
इंसा हो इंसान बनो तुम, धरती पर खुशियाँ फैलाओ।

जीवन धर्म

इस धरती पर इंसा तुम तो, सबसे किस्मत वाले।
फिर क्यों धर्म-मजहब को लेकर, अलग किए हो ताले।

सभी धर्मों की एक ही भाषा,
मानवता-भाईचारा।
सद्कर्मों को अपनाओ,
यही जीवन की परिभाषा।

राह अलग-अलग हैं लेकिन,
सबकी एक ही मंजिल।
सृष्टिकर्ता के चरणों में,
मिलती है वो मंजिल।

अपनी-अपनी राह पर चलकर,
जो भी आगे बढ़ रहा।
मत अवरोध बनो तुम मानव!
यदि सही राह वह चल रहा।

मजहब-धर्म के नाम पर मानव, हिंसा मत बढ़ाओ।
मानवता को गले लगाकर, जीवन धर्म निभाओ।

मैं होता दुखदायी

गहरी चोट को खाकर मानव! गौर जरा फरमाले!
पर.. अपने घावों पर मरहम, खुद ही आज लगाले।

अपने मैं को भूल अभी से,
प्रभु को शीश झुकाले।
बीते कल से सीख को लेकर,
कल सुरक्षित कर ले।

अपने पंखों की ताकत से,
पक्षी ऊँचा उड़ता।
पर आश्रय नीचे धरा पर,
सदा याद वो रखता।

प्रकृति पल-पल सीख है देती,
पतझड़-सावन देकर।
दिवस-माह भी हमें समझाते,
पूनम-अमावस लाकर।

मैं-मैं में कुछ भी नहीं रखा है,
नहीं पूर्ण कोई होता।
ठूँठा पेड़ नहीं झुकता है,
फलदार वृक्ष ही झुकता।

बीते कल को सोच में रखकर, कदम जो आज बढ़ाता।
सही दिशा में कदम बढ़ाकर, मंजिल अपनी पाता।

अनुपम दृश्य

संध्या काल की उस बेला में, कितना सुंदर दृश्य दिखा।
ताली- थाली-शंख बजे जब, सारा भारत गूँज उठा।

बागडोर जिन्हें सौंप रखी है,
उनकी बात का मान रखा।
कोरोना की इस लड़ाई में,
सबने सबका साथ दिया।

घर-परिवार संग अपने-अपने,
शंखनाद सबने किया।
आँगन से आँगन जुड़े तब,
जब भारत में शंखनाद हुआ।

ध्यान रखा सबने सभी का,
खुद ही दूर हुए सबसे।
मन से सबका साथ निभाया,
कोरोना भागे भारत से।

मूलभूत जो सेवा दे रहे, सबने उनको नमन किया।
ताली-थाली शंख बजाकर, सबने उनको नमन किया।

नमन

पुलिस डॉक्टर और बुहार, बनते जीवन के आधार।
स्वास्थ्य-स्वच्छता के ये सार, करते जीवन की संभार।

जब भी आए कोई मुसीबत,
इनसे ही होता उपचार।
जन-जन को बचाने खातिर,
अर्पित करते ये दिन-रात।

जैसे अभी संकट के दौर में,
कोरोना को दे रहे मात।
सारे देश में परिचय देकर,
हर जगह हैं इनके हाँथ।

इनके हाथों ही सुरक्षा,
ये तो दीन बंधु समान।
औरों को खुशियाँ देने को,
खुद का छोड़ें घर-संसार।

नमन करें हम मिलकर इनको! करते हैं ये बड़े ही काम।
इनसे स्वास्थ्य अनुशासन इनसे, सारे करलो इन्हें प्रणाम।

जीवन भी एक बंधन

अभी भी वक्त की माँग यही है, सारे रह लो बंधन में।
तभी कोरोना नहीं घुसेगा, आपके जीवन आँगन में।

स्वयं के हाथों कैद हो जाओ,
अपने प्यारे घर में तुम!
कर लो तुम परिवार की रक्षा,
होठों की मुस्कान हो तुम!

तुम्हीं हो सिंदूर की लाली,
और ममता की आँखे तुम।
सारे सुरक्षित रहेंगे तब,
जब बंधन को कैद न मानो तुम!

यूँ तो आपा-धापी में,
चलता था जीवन का मेला।
पर आज कोरोना के कारण ही,
सजालो घर में ही मेला।

अपनों को तुम समय खूब दो, कर दो दूर शिकायत अब,
कोरोना तो भागेगा ही, घर से प्रार्थना कर लो सब।

डगर विश्वास की

क्यों? उदास तू बैठा मानव! चिंता कौन सी मन में?
पर... जो गलती लगे न तुझको, शांत भाव ला मन में।

अवरोध-गतिरोध तो आते,
जीवन की डगर में।
समझदार उन्हें पार है करता,
हर हालत उस क्षण में।

कोमल डाली टूट लटकती,
लगता है वह सूखी।
लेकिन... अंतसरस को खींच-खींच,
वह डाल तो जीवित होती।

प्रकृति सीख देती है मानव,
ध्यान से यदि तू देखे।
पग-पग पर और डगर-डगर पर,
नए-नए दृश्य को देके।

हम प्राणी अनदेखा करते,
जो संकेत न समझें।
प्रभु कृपा की आए घड़ी जब,
समय पर हम न पकड़ें।

वक्त के साथ सम्हल जा प्राणी, सही चिंतन को करके।
अभी इसी पल कदम बढ़ादे, सारी शक्ति लगा के।

समय बनाम नारी

टूट ना जाए बाँध सब्र का, वो मजबूत गारा है नारी।
हो परिवार में विचलित कहीं कोई, आगे बढ़ संबल बनती है नारी।

सीख सयानी वो देने की खातिर,
दादी और नानी बनी वह नारी।
घाव हरे कहीं फिर से ना हो जाएँ,
धैर्य का मलहम लगाती है नारी।

रहे अधरों पर मुस्कान हमेशा,
धीरज का भोज कराती है नारी।
शिशिर-हेमंत हो या फिर ग्रीष्म ही,
खुशियों के फूल खिलाती है नारी।

त्याग-दया-वातसल्य की त्रिवेणी,
घर की गगरी में मीठा सा पानी।
ममता की मूरत और राखी की कीमत,
हर छबि में तो महान है नारी।

बना है जो घर मकान न हो कभी,
स्वर्ग सा सुंदर सजाती है नारी।
धीरज-सब्र और धैर्य संजोकर,
इक डोरी में सबको बाँधती है नारी।

कल को भूलकर गलती न हो जाए, आज को मजबूत बनाती है नारी।
भूत-भविष्य और वर्तमान की, सुंदर एक परिभाषा है नारी।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

सीता गुप्ता

दुर्ग, छत्तीसगढ़

E mail- sitarkgupta@gmail.com

Mobile - 8839445051

कभी -कभी मनुष्य के जीवन में अचानक ऐसा पल आता है कि उसे अपनी जीवन रूपी नौका में छेद होने की आशंका होने लगती है।

तब वह आशंकित मन से भयभीत होकर कभी तो विचारों की शून्यता में जाने लगता है तो कभी विनयावत भाव से प्रभु चरणों में विनती करने लगता है।

लेकिन जब मनुष्य जीवन रूपी नाव में औरों को भी अपने साथ पाता है तो नाव में छेद की आशंका का विचार उसे एक ही पल में टूटने नहीं देता बल्कि... अपने साथ इतने लोगों का सहारा उसे एक संबल भी देता है।

तब वह उस आपात स्थिति से निपटने के लिए उस समूह का एक हिस्सा भी बनता है। जैसा कि वर्तमान में कोरोना के कारण स्थिति बन गई है।

आपात की स्थिति में लोग समस्या के बचाव में कारण के साथ निदान के प्रयासों में भी लग जाते हैं। और... स्वयं के जीवन के लिए भी रास्ते निकालते हैं, ताकि उनका धैर्य उनकी हिम्मत बनी रहे। चूँकि.... मैं भी एक मानव हूँ अतः इस आपात स्थिति में मैंने अपने मूल स्वभाववश अध्यात्म का तो सहारा लिया ही है, साथ ही एक कवयित्री होने के नाते अच्छे विचारों को लोगों तक पहुँचाने के लिए अपनी कलम पर मजबूती बढ़ा दी है और... नए सृजन में स्वयं को लीन कर लिया है, जो समाज के साथ मुझे भी संबल दे रहा है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-114-5

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/